Pańkat. I,335. Kumiras. 5,67. Brig. P. 1,11,2. विमाने: कलरुंसपाएड्रिंस 4,3,12. कलरुंसी das Weibchen Rage. 8,58. — 2) ein vorzüglicher König (न्पात्तम) H. an. Med. Vicva im ÇKDr. — 3) der höchste Geist, das Brahman (vgl. 支讯) Çabdar. im ÇKDr. — 4) N. eines Metrums (4 Mal

कलक्कार (क॰ + कार्) 1) adj. f. ई streitsüchtig, zänkisch P. 3,2,23.

— 2) f. ेकारी N. pr. der Gemahlin Vikramakaṇḍa's Katuls. 23,33.

कलक्नाशन (क॰ + ना॰) m. N. eines Baumes, Caesalpina Bonducella
Flemm. (प्रतिकर्ज्ञ), Çabbam. im ÇKDa.

कलरुप्रिय (क° + प्रिय) 1) adj. f. श्रा streitsüchtig, zänkisch R. 5,17, 27. — 2) m. ein Bein. Nårada's MBH. im ÇKDa. Vgl. कलिकार्क. — 3) f. ेप्रिया N. eines Vogels, Gracula religiosa (सारिका), Riáan. im CKDa.

कलक्तिरिता (कलक् + म्रतिरिता) f. eine Heroine, welche in Folge eines Haders von ihrem Geliebten getrennt ist: चारुकार्मपि प्राणानायं राषाद्वास्य या । पद्मातापमवाद्रीति कलक्तिरिता तु सा ॥ Sim. D. 48, 2.3. 46,9.

कलक्ष्य (von कलक्), कलक्ष्यते hadern, streiten P. 3,1,17. स्त्रीपुर्ग् चैंग कलक्ष्यते 2,4,9,Sch. act.: तदग्य तया सक् खर्वे कलक्ष्यता ममेपती वेला विलग्ना Рабкат. 207,22.

कलाकु Bez. einer best. grossen Zahl LALIT. 141. — Vgl. कर्षु. कलाकिन् (wie eben) adj. streitend, streitsüchtig: युवानस्तस्यां कितवाः कलिक्नः प्रमायुका भविति Åçv. Gans. 2,7. श्रय ये उत्पाः कलिक्नः पि-श्रुना उपवादिनस्ते kuland. Up. 7,6,1. श्रय पत्रैतत्कुलं कलिक् भवित in dem Falle, wenn eine Sippe in Streit geräth Kauç. 97.

जैला und जेला (zu belegen nur mit dieser Betonung) f. Çant. 3, 8. 1) ein kleiner Theil eines Ganzen, namentlich gebraucht vom Sechzehntel Taik. 3, 3, 382. Med. 1. 5. यत्कलया ते शफेर्न ते क्रीणामीति पणेता-भाविष्य सामं विषात wenn er um den Soma feilscht, indem er sagt: ich will ihn dir für ein Sechzehntel, für ein Achtel abkaufen, so lässt er damit dem Soma nicht den Werth einer ganzen Kuh TS. 6, 1, 10, 1. ÇAT. Ba. 3, 3, 3, 1. यथा कला यथा शक यथ ऋणं संनयामिस RV. 8, 47, 17. या वै कला मनुष्याणामतर् तद्वानाम् ÇAT.Ba. 10,4,1,16. fg. षाउशकला वा प-शवी ऽनुकलमेवास्नि क्रियं द्यति 12,8,3,13. प्रवापतिः षेटिशकलः 14,1, 3,22. 7,2,2,17. पुरुष: 14,1,6,36. 13,2,2,17. Ait. Br. 5,26. Pragnop. 6, 2. KHAND. Up. 4,3,2.3. 6,3.4. 7,3.4. 8,3.4. Nin. 11, 12. सङ्ख्लमा का-लाम् ÇAT.BR. 10,4,4,4. म्रन्तं तु वर्न्ट्एद्यः स्ववित्तस्याशमष्टमम् । तस्यैव वा निधानस्य संख्यायात्वीयसों कलान् ॥ М. 8, 36. नारायणकलाः Виль. P. 1,2,26. 1,17. 3,1. 4,8,7. धर्मकला 1,3,9. अनुतायकलया 3,15,36.39. राज्यं च पुत्राश्च यशा धनं च सर्वे न सत्यस्य कलामुपैति kommt nicht einem Sechzehntel der Wahrheit gleich d. h. ist weit weniger werth als die Wahrheit MBn. 3, 1375. सो उक्निश्मिन्समार्ग्भे सुनीतस्य कलामपि । वि-मृश्रज्ञाभिपश्यामि hierin sehe ich auch nicht die geringste Klugheit R. 3,46,11. मुर्चे ते जपयत्तस्य जलां नार्रुति षाउशीम् M. 2,86. Asá. 11,3. MBs. 1, 1032. 3,8429. Pankat. II, 58. Vgl. कलापूर्ण. — 2) ein Sechzehntel der Mondscheibe AK. 1, 1, 2, 17. 3, 8. H. 106. an. 2, 477. MED. शशिनः कला Hir. Pr. 1. Kumaras. 5, 7 1. Megh. 87. Çıç. 9, 32. शशिकला Vid. 101. चन्द्रकाली Katuas. 1,39. Personif. eine Tochter Kardama's und Gemahlin Martki's Buig. P. 3, 24, 22. 4, 1, 13. - 3) Zins, als ein bestimmter Theil des Kapitals Trik. H. an. Med. Nir. 6, 6. Çiç. 9, 32. -- 4) ein best. Zeittheil AK. 3, 4, 26, 200. H. an. Med.  $\frac{1}{900}$  des Tages oder I Minute und 56 Secunden nach M. 1, 64. HARIV. 501. VP. 22. 1/1800 des Tages oder 48 Secunden Gjot. in LIA. I, 823. Sch. zu VP. 22.  $20^{l}/_{10}$  Kalå = 1 Muhûrta oder  $\frac{1}{30}$  des Tages, also 1 Kalå = 2 Minuten und  $\frac{26^{54}}{201}$  Secunden Sugn. 1, 19, 5.  $30^{1}/_{10}$  Kalå = 1 Muhurta, also 1 Kalå = 1 Minute und 35205/301 Secunden MBH. in VP. 22, N. 3. 1 Kala = 8 Secunden BBA-VISHJA-P. a. a. O. AK. 1, 1, 3, 11. H. 136. - MBH. 3, 150. DEV. 11, 8. -5) der 60ste Theil oder eine Minute eines Grades Sungasiddu. im ÇKDn. COLEBR. Misc. Ess. II, 151. — 6) eine Mora (in der Prosodie) COLEBR. Misc. Ess. II, 131. — 7) Atom (?): स (रूस:) खल् त्रीणि त्रीणि त्रलासक्-स्नाणि पञ्चर्श च कला एकंकेस्मिन्धाताववतिष्ठत एवं मासेन रसः शुन्ती-भवति स्त्रीणां चार्तविमिति । भवति चात्र । म्रष्टार्श सक्स्नाणि संख्या स्य-स्मिन्सम् चये । कलानां नवतिः प्रोक्ता स्वतत्त्रपरतत्त्रयोः ॥ in jedem der 6 Dhatu (mit Ausschluss des 7H selbst) 5015 Kala, also in der Gesammtheit 18090 Suca. 1, 44, 6. fgg. - 8) Bez. der Substrate der Elemente (ঘানু) des menschlichen Leibes, deren sieben gezählt werden: Fleisch, Blut, Fett, zäher Schleim, Urin, Galle, Samen Suga. 1,326, 13. 18. 337, 15.19. 2,268,21. 269,2. 443,12. - 9) Flöckchen, Knöllchen, ein Embryo unmittelbar nach der Zeugung (কালেন) H. an. Vais. beim Sch. zu Çiç. 1, 59. Med. (কালেনা). - 10) die monatliche Reinigung Viçva im ÇKDa. — 11) Kunstgriff, Kunstfertigkeit (= কাবে Vicva im CKDR.), Kunst (namentlich eine schöne Kunst), Handwerk AK. 3, 4, 26, 200. 2, 10, 35. H. 900. н. ап. мер. गीतवादित्रकुशलाः नृत्येषु कुशलास्तवा । उपायज्ञाः कला ज्ञाञ्च वैशिको परिनिष्ठिताः (योपितः) ॥ R. 1,9, ८. उपसेवेशयत्राजंस्ततस्ता दुपद्ात्मजाम् ॥ कलाभिस्तिस्भी राजन्ययाविधि मनस्विनीम् ॥ Мви. 14, 2645. fg. चतुःषद्यङ्गमद्द्त्जलात्तानं ममाद्रुतम् 13,1334. म्रहं जलानाम्-षभा विमुद्धे यया (मायया) वशो ऽन्ये किमुतास्वतन्त्राः Baka P. 8,12,43. ये चैवं पुरुषाः कलाम् कुशलास्तेघेव लाकस्थितः Вильть. 2, 19.91. सक-लकलापारं मता उमरशक्तिर्नाम राजा Pankar. 3, 11. I, 4. कलां वैशिकीम् Мякки. 1, 15. साव्हित्यसंगीतत्रालाविक्तिनः Вилитя. Suppl. 2. जूतकाला Кати(s. 6, 26. निजवाणिज्यक्ताकाशत्वादिन् 27. वाला नृत्यादिका Sta. D. 33,7.6. 1, 15. 33, 12. DAÇAK. 60, 12. 14. 61, 1. चतुःषष्टिकालागमप्रयोग-चत्र 140, 4. Ducrtas. 68,14. Ind. St. 2, 390. 1,10. Çridharasvimin zu Buig. P. führt aus dem Caivatantra folg. 64 K alå (vgl. o. d. Beisp. aus MBn. 13, 133() auf: गीतम्, वाखम्, नृत्यम्, नात्यम्, म्रालेष्यम्, विशेषकच्केयम्, तपञ्जनुमुमवितिविकाराः, पुष्पास्तरणम्, दशनवसनाङ्गरागाः, माणभूमि-काकर्म, शयनर्चनम्, उद्कवायम्, उद्कथातः, चित्रा योगाः, माल्यययन-विकल्पाः, शेखरापीटयोजनम् । नेपच्ययोगाः, कर्णपत्रभङ्गाः, गन्धपृक्तिः, भूषणयोजनम्, ऐन्द्रजालम्, कै।चुमार्योगाः (!), कृस्तलायवम्, चित्रशाकपू-पभद्त्यविकार्क्रिया, पानकरसरागासवयोजनम्, सूचीवापकर्माणि, सूत्रक्रीडा (Var.: सूचीवापकर्नसूत्रक्रीडा, वीणाउमह्तकवाष्यानि), प्रदेखिका, प्रतिमा-ला, द्ववंचक्रयोगाः, पुस्तकवाचनम्, नारिकाष्ट्यायिकादर्शनम्, काव्यसमस्या पूर्णाम्, परिकावेत्रवाणविकत्त्याः, तर्कुकर्माणि, तत्तपाम्, वास्तुविग्वा, द्व ट्यर त्रपरोत्ता, धातुवादः, मणिरागज्ञानम्, म्राकर्ज्ञानम्, वृज्ञापुर्वेद्योगाः, मेषकुक्कारलावकपुद्धविधिः, शुक्रमारिकाप्रलापनम्, उत्मादनन्, वेशमार्जन-काशलम्, म्रतरम्ष्टिकाययनम्, ब्लेट्क्तिकविकल्पाः, देशभाषाज्ञानम्, पुष्प-